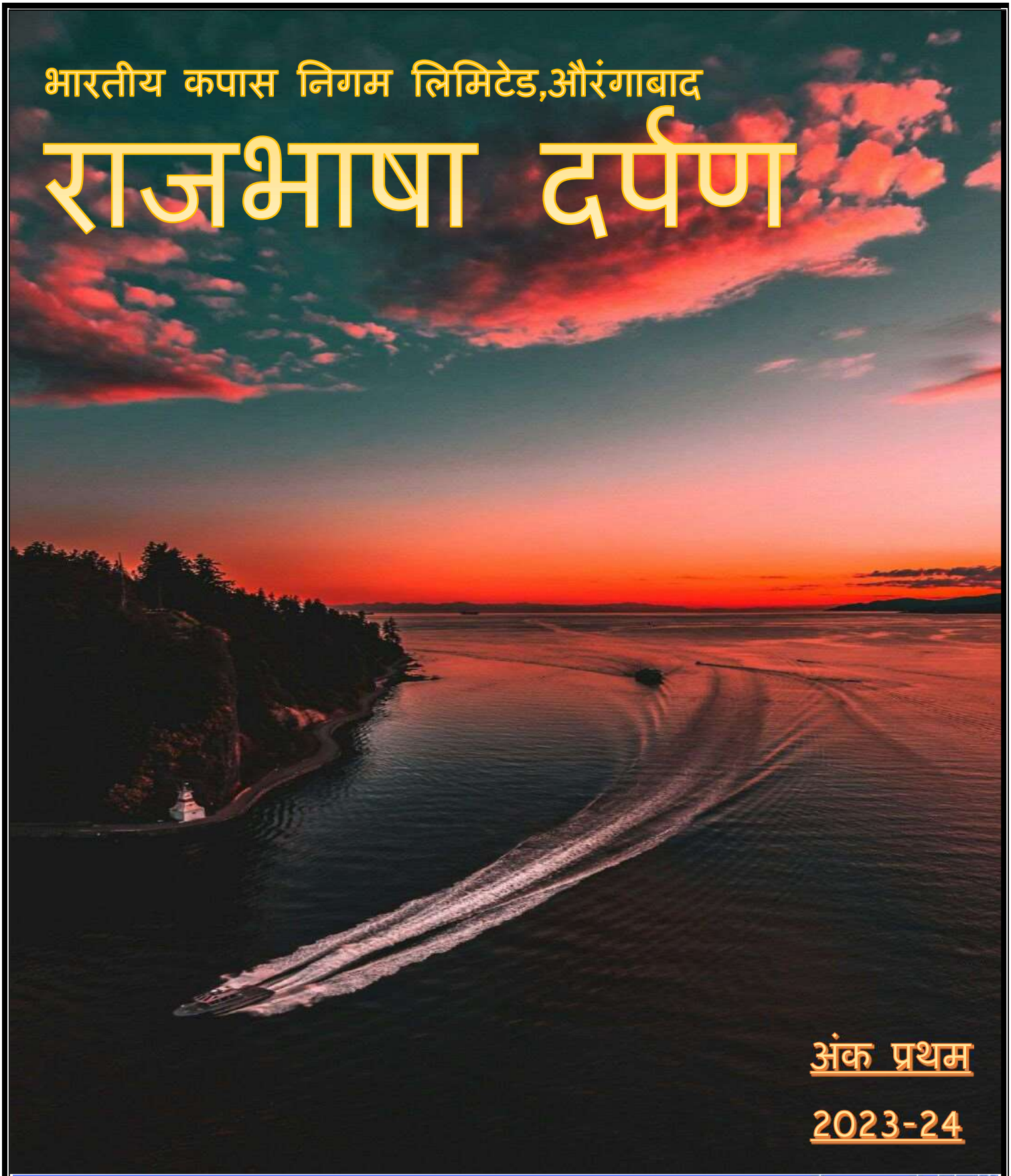
भारतीय कपास निगम लिमिटेड,औरंगाबाद

राजभाषा दर्पण



अंक प्रथम

2023-24

भा.क.नि.

भारतीय कपास निगम लिमिटेड

एक मिनी रत्न कंपनी (भारत सरकार का उपक्रम, वस्त्र मंत्रालय के अंर्तगत)

The Cotton Corporation of India Ltd.

A Mini Ratna Company

(Government of India undertaking, Under Ministry of Textiles, CIN : U51490MH1970GOI014733)

CCI

G20 भारत 2023 INDIA

वसुधैव कुटुम्बकम्

ONE EARTH • ONE FAMILY • ONE FUTURE

Azadi Ka Amrit Mahotsav

संरक्षक की कलम से.....



वर्ष 1950 में भारत के संविधान निर्माताओं द्वारा सरकार के कामकाज की भाषा के रूप में हिंदी को राजभाषा के रूप में घोषित करते हुये अनुच्छेद 343 से 351 तक हिंदी संवैधानिक स्थिति, उसकी लिपि, विस्तार, कार्यान्वयन की ज़िम्मेदारी और समय-सीमा के बारे में विस्तारपूर्वक प्रावधान किया गया है। उन्ही प्रावधानों का ठोस फल है, राजभाषा अधिनियम 1963 उसके पश्चात राजभाषा नियम 1976, आया जिसमे हिंदी कार्यान्वयन की दिशा की जानकारी दी गयी है।

हमारा निगम राजभाषा विभाग, भारत सरकार के सभी आदेशों का पूर्ण अनुपालन कर रहा है। शाखा कार्यालय औरंगाबाद "ख" क्षेत्र में स्थित है। भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम की अनुपालन में शाखा द्वारा "क", "ख" एवं "ग" क्षेत्र के लिए निर्धारित लक्ष्य से अधिक प्रतिशत में पत्राचार किया जा रहा है। उक्त के साथ साथ ही शाखा द्वारा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति-औरंगाबाद का दायित्व भी बखूबी निभा रहा है।

यह उपलब्धि हमारे सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों की हिंदी के प्रति निष्ठा और ईमानदारी पूर्ण प्रयत्नो का परिणाम है। मुझे विश्वास है कि भविष्य में भी निगम आप सब के सतत योगदान से राजभाषा के प्रगति पथ पर आगे बढ़ता रहेगा।

अर्जुन एस. दवे

उप महाप्रबंधक, भारतीय कपास निगम लिमिटेड एवं

अध्यक्ष, न.रा.का.स-औरंगाबाद

संपादकीय

पुनीत राठी
सहायक महाप्रबंधक, (वित्त/लेखा),
भारतीय कपास निगम लिमिटेड एवं
सदस्य सचिव, न.रा.का.स-औरंगाबाद



देश के सर्वतोन्मुखी विकास के लिए सम्प्रेषण हेतु एक ऐसी भाषा की आवश्यकता होती है, जो जन-मन की भाषा हो। इस जरूरत को राजभाषा हिंदी बड़ी सहजता से पूरा कर रही है। आज चाहे निजी व्यापार हो, सरकारी या बहुराष्ट्रीय कंपनियां, सभी दूर-दराज़ के जनमानस तक पहुचने के लिए पुरजोर कोशिश कर रहें है। परिणाम स्वरूप, विज्ञापन में हिंदी एवं प्रांतीय भाषाओं का प्रयोग दिन दूना रात चौगुना बढ़ता जा रहा है। कई बार तो ऐसा भी देखा जा रहा है कि निजी व बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा उत्पाद तो उच्च आय वर्ग के लोगो के लिए बनाए गए है, लेकिन उनके विज्ञापन हिंदी एवं प्रांतीय भाषाओं में दिये जा रहें है। यह हिंदी एवं प्रांतीय भाषाओं का सामर्थ्य को उजागर करने के लिए पर्याप्त है।

अपनी भाषा के माध्यम से ही भारत को सही अर्थ में समझा जा सकता है। जिसके लिए राजभाषा दर्पण को आपकी रचनाओं की सतत प्रतीक्षा रहेगी।



भारतीय कपास निगम लिमिटेड, शाखा कार्यालय-औरंगाबाद

की गृह पत्रिका

राजभाषा दर्पण

का संपादक मण्डल आपके सुझावों का हार्दिक स्वागत करता है।

इस पत्रिका में छपे लेख लेखकों के व्यक्तिगत विचार है।

संपादक मंडल इसके लिए जिम्मेदार नहीं है।

*****

अनुक्रमणिका

क्रम संख्या	शीर्षक	पृष्ठ संख्या
01	जल जीवन का आधार	05-08
02	पिता	09
03	देश की आत्मा है हिंदी	10-12
04	जल शक्ति	13-16
05	तकनीकी क्षेत्र में भारत के बढ़ते कदम	17-19
06	माँ	20
07	दैनिक जीवन में योग का महत्व	21-23
08	आंतरिक गतिविधियां	24-29



जल – जीवन का आधार



सृष्टि की उत्पत्ति के साथ जिन आवश्यक तत्वों की आवश्यकता जीवन के लिए नितान्त आवश्यक है, वह है वायु एवं जल। प्रचलित भाषा में यह अक्सर पूछा जाता है कि हवा पानी कैसा है, अथार्त जीवन यापन के लिये अहम कारक तत्व जल है। " क्षितिजल पावक गगन समिरा, पंचतत्व यह अधम शरीरा" मानव शरीर का निर्माण जिन तत्वों से हुआ उसमें जल एक महत्वपूर्ण कारक है। मानव शरीर का लगभग 70 प्रतिशत अंश जल है। यह कथन उपयुक्त होगा कि पृथ्वी का सुहाग एवं जीवों का प्राण जल है।

जल हमारे जीवन के लिये अत्यंत आवश्यक है हम खाने के बिना एक माह तक जीवित रह सकते है किंतु जल के बगैर एक सप्ताह से ज्यादा जीवन यापन नहीं कर सकते। तभी तो ऐसा माना जाता है कि "जल ही जीवन है"।

जल को विभिन्न नाम पर्यायवाची रूप में जैसे पानी, नीर, वाटर आदि से जाना जाता है। आँखों से बहता नीर, जीवन के लिये जल एवं इज्जत रूप में पानी का वर्णन अलग-अलग स्थलों पर शब्दों का प्रयोग किया गया है। जगत में जल का अंश दो तिहाई है। एक भाग धरातल के उपरांत भी मानव जीवन ही नहीं अपितु सृष्टि के लिये उपयुक्त (प्रचुर मात्रा में) जल की उपलब्धता नहीं हो पा रही है। जीवन यापन के लिए जल की किल्लत अथवा अभाव हो रहा है। यह यक्ष प्रश्न है। जल का अधिकांश भाग लगभग 70 से 80 प्रतिशत कृषि के लिये 10 से 20 प्रतिशत तक कल कारखानों एवं उद्योग के लिये एवं शेष 5 से 10 प्रतिशत जल जीवन यापन

अर्थात नहाने से रसोई घर एवं पीने के लिये उपयोग किया जाता है। जल का उपयोग इंसान ही नहीं वरन संसार के सभी जीव-जंतु, पेड़-पौधों से लेकर निर्जिव भवन निर्माण एवं मोटर गाड़ी के लिये भी आवश्यक है।

जल का आभाव एक विश्व व्यापी समस्या है एवं महानगरों में जल के संकट का होना सभी के लिये एक गंभीर चिंतन का विषय है। इसके लिये जिम्मेदार कौन? मानव प्रगति के कारण पर्यावरण एवं प्रकृति का अंधाधुंध दोहन कर रहा है। प्रकृति ने जीवन जीने के लिये सब कुछ प्रचुर मात्रा में प्रदान की है किन्तु विकास की पथ पर चल कर मानव प्रकृति का दुरूपयोग कर विनाश को आमंत्रित कर रहा है। हमारे वायुमंडल में उपरी सतह पर आच्छादित ओजोन की परत सूर्य की पराबेंगनी किरणों से मानव जीवन अथवा इस सृष्टि की रक्षा करता है। पर्यावरण असंतुलन के कारण ओजोन परत में छिद्र होने से प्रकृति नष्ट होने की संभावना है। जिसके लिये पर्यावरण विदों द्वारा बार-बार विश्व पटल पर विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम आयोजित कर बुद्धिजीवियों को सजग करने का प्रयास निरंतर जारी है।

पर्यावरण असंतुलन के कारण ही कही अतिवृष्टि (बाढ़) तो कही अनावृष्टि (सुखा) की स्थिति बढ़ रही है। बाढ़ एवं सुखा दोनों ही स्थिति में मानव जीवन संकट का सामना करता है। हमें ऐसी विपरीत स्थिति को सरल एवं सुचारू करने के लिये चिंतन एवं मनन की आवश्यकता है। शरीर को प्रतिदिन 3 से 5 लीटर जल की आवश्यकता होती है। यदि शरीर में पानी की मात्रा कम हो जाये तो अनेक प्रकार की बीमारी घर कर जाती है। जिससे अस्पताल में अलग से पानी चढ़वाना पड़ता है। कहने का आशय यह है कि इस जगत में व्याप्त सभी जीवों जलचर,थलचर अथवा नभचर से साथ-साथ स्थूल एवं गतिमान, सजीव अथवा निर्जिव की होने की परिकल्पना जल के बगैर संभव नहीं है। जल हमें ठोस, तरल एवं गैस (वाष्प) के रूप में प्रकृति से विरासत में प्रदत्त अनमोल धरोहर है। जिसका संरक्षण एवं संचय के साथ उचित उपयोग भी हमारा दायित्व है। दो भाग जल होने के उपरांत भी

उपयोग करने लायक जल की कमी है। जल ही वह कारक है जिससे पर्यावरण में संतुलन बना रहता है।

धर्म प्रधान राष्ट्र में जल को देवता के रूप में वरण किया गया है। किसी धार्मिक अनुष्ठान में जल को हाथ में लेकर संकल्प के साथ मन को शांत किया जाता है। अथार्त जीवन के पग-पग पर एक तत्व की अति महत्ता दिखाई दे रही है वह जल है। जल के कणों, ओस की बूंदों को कवियों एवं शायरों द्वारा अलग-अलग रूपों में वर्णित कर साहित्य सृजन किये हैं। प्रकृति के इस अमृत तुल्य अनुपम उपहार के बिना जगत की परिकल्पना करना संभव नहीं है। किन्तु मानव इस प्रकृति प्रदत्त बिना मूल्य उपहार को गन्दा कर अपनी विकास को गगन चुम्बी कर विनाश को आमंत्रित कर रहा है। गंगा, यमुना, गोदावरी, नर्मदा आदि पवित्र नदियाँ दूषित हो गयी है। सरकारी उपाय ऊंट के मुहं में जीरा के समान दिखाने के लिये चल रहे है। कल-कारखानों एवं फैक्ट्रियों का गन्दा पानी एवं सीवरेज का पानी पवित्र नदियों में बहाया जा रहा है जिससे अनेकानेक बीमारियों का जन्म हो रहा है। अतएव स्वच्छ भारत के साथ–साथ स्वच्छ जल अभियान की आवश्यकता सरकारी स्तर पर ही नहीं वरन सभी जन के लिये नितान्त आवश्यक है। वरना अगला विश्वयुद्ध पानी के लिये आरम्भ हो सकता है ऐसा कथन विद्वानों द्वारा कहा जा रहा है। हमें दीन बुद्धि एवं हीन बुद्धि के जन मानस को आस्था एवं विश्वास की परम्परा को परित्याग कर वर्तमान समस्या को अंगीकार करने हेतु जग जागरण अभियान चलाना चाहिये। वरन जल के लिये किलोमीटर दूर अथवा हजार फुट गहराई पर जाने के उपरांत भी नसीब होना दुष्कर कार्य होगा।

जल जीवन का आधार है तो इसकी अति भी मानव जीवन के लिये शाप है। प्रकृति से पंगा का परिणाम भारत भू पर केरल एवं उत्तराखंड राज्य में वर्तमान में

स्पष्ट दिखता है। जल जीवन का आधार है। जल के महत्व को रहीम जी समझते हुये कहते हैं कि...

रहीमन पानी राखिये, बिन पानी सब सून।

पानी गये न उबरें, मोती मानुष चुन।।

अतएव यह कहा जा सकता है कि पानी (जल) के बिना यह जगत सूना है एवं सृष्टि की कल्पना संभव नहीं है।

जल जीवन है, स्वच्छता का आधार है।

अतएव सब मिलकर संकल्प करें कि स्वच्छ भारत की कल्पना की जाय तो स्वच्छ जल को केंद्र में रखकर की जाय वरना एक दिन ऐसा भी आ सकता है जब जल बोतल में बंध हो जायगा एवं पेट्रोल के भाव से उपर चला जाएगा। सरकार द्वारा सभी स्तर पर निरंतर सरकारी प्रयास जारी है। कई सरकारी योजनायें कार्य कर रही है। फिर भी सभी का दायित्व एवं कर्तव्य है कि सरकारी योजनाओं को सफल बनाने एवं जल संचय के लिये सजग प्रहरी के भाँति सचेत होकर अपना सहयोग दें।

जय हिन्द, जय भारत

इज्जत हो बचानी, स्वच्छ रखो पानी।

बी.एन.तिवारी
सहायक प्रबन्धक (विपणन)
भारतीय कपास निगम लिमिटेड-औरंगाबाद

पिता



वो पिता होता है जो....

स्वतः पुराने कपड़े पहनता है,
बच्चे के लिए नई जीन्स टी-शर्ट लाता है।
स्वयं पुराना मोबाइल चलाता है,
बच्चों को नया स्मार्ट मोबाइल दिलाता है।

वो पिता होता है जो....

अपने बच्चों को अच्छे विद्यालय में,
पढ़ाने के लिए भाग-दौड़ करता है।
रुपए उधर लाकर डोनेशन भरता है,
हर कदम पर साथ-साथ चलता है॥

वो पिता होता है जो....

बच्चों के गलत निर्णय पर नाराज होता है,
उनके उज्ज्वल भविष्य की चिंता कर रात-रात भर नहीं सोता है।
फिर भी जब बच्चा कहता है "आपने मेरे लिए किया ही क्या है?"
यह सुनकर मन ही मन रोता है।

वो पिता होता है जो....

बेटी की विदाई पर छुप छुप कर अकेले में रोता है,
ससुराल में बेटी की खुशियों के लिए सबके सामने हाथ जोड़ता है।
संतान सुखी हो ईश्वर से बस यही प्रार्थना करता है,
जिसका प्यार दिखता नहीं सिर्फ अनुभव होता है।

वो पिता होता है... वो पिता होता है।

सत्यप्रकाश तिवारी
भारतीय कपास निगम लिमिटेड-औरंगाबाद

देश की आत्मा है हिंदी

किसी भी आजाद देश की अपनी एक राष्ट्रभाषा होती है, जो उस देश का गौरव होती है तथा राष्ट्रीय एकता और राष्ट्र के स्थायित्व के लिए पूरे देश में उसका उपयोग किया जाता है। इसी तरह हर देश की अपनी एक राजभाषा होती है, राजभाषा मतलब सरकारी कामकाज की भाषा और जिससे एक आम नागरिक सरकार के कामकाज को समझ सकें।

हमारे भारत देश में हिंदी को राजभाषा का दर्जा 14 सितंबर 1949 को मिला और भारत के संविधान के भाग-17 में इससे संबधित महत्वपूर्ण प्रावधान किए गए। इसी ऐतिहासिक महत्व के कारण 1953 से राष्ट्रभाषा प्रचार समिति द्वारा प्रतिवर्ष 14 सितम्बर को हिंदी दिवस का आयोजन किया जाता है। हिंदी के प्रोत्साहन के दृष्टि कोण से इस दिवस के आयोजन का महत्वपूर्ण स्थान है।

एक भाषा के रूप में हिंदी न सिर्फ भारत की पहचान है बल्कि यह हमारे जीवन मूल्यों, संस्कृति एवं संस्करो की सच्ची संवाहक, संप्रेषक और परिचायक भी है। बहुत सरल, सहज और सुगम भाषा होने के साथ हिंदी विश्व की संभवतः सबसे वैज्ञानिक भाषा है जिसे दुनिया भर में समझने, बोलने और चाहने वाले लोग बहुत बड़ी संख्या मे मौजूद है। यह विश्व में तिसरी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है जो हमारे पारंपरिक ज्ञान, प्राचीन सभ्यता और आधुनिक प्रगति के बीच एक सेतु का कार्य करती है। हिंदी भारत संघ की राजभाषा होने के साथ ही नौ राज्यों और दो संघ शासित क्षेत्रों की भी प्रमुख भाषा है। संविधान की आठवी अनुसूची मे शामिल अन्य इक्कीस भाषाओं के साथ हिंदी का एक विशेष स्थान है, जिसके कारण भारत की आत्मा है हिंदी, ऐसा निश्चित ही कहा जा सकता है।

विश्व भर में करोड़ो की संख्या मे भारतीय समुदाय के लोग एक संपर्क भाषा के रूप में हिंदी का इस्तेमाल कर रहे हैं। इससे अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी को एक नई पहचान मिली है। यूनेस्को की सात भाषाओं मे हिंदी को भी मान्यता मिली है।

हम कितनी भी ऊँचाई पर पहुँच जाये परन्तु हमें अपनी मुख्यधारा से जुड़ा रहना जरुरी होता है। इसी तरह किसी भी राष्ट्र की उन्नति के लिए वहां की भाषाओं से ओतप्रोत होना भी जरुरी है। राष्ट्रभाषा हिंदी इसी संदर्भ में हमें एक नए पद की ओर अग्रसर कर रही है। चाहे वह आज़ादी से पहले का समय हो या आज़ादी के बाद का समय इसीलिए हमें हिंदी भाषा का ज्ञान होना बहुत आवश्यक है। किसी कार्य में सफलता प्राप्त करने के लिए परिश्रम तथा संघर्ष करना पडता है। हमारी हिंदी भाषा भी कड़े संघर्ष के बाद वर्त्तमान स्थिति तक पहुँची है।

ऐसी वाणी बोलिए, मन का आपा खोय,

औरन को शीतल करे, आपहु शीतल होय।

जो भाषा सीधी, सरल, आकर्षक, सीखने-सिखाने में आसान, जिसे अधिकांश लोगों ने अपनाया है, जो साहित्य की दृष्टी से समृद्ध हो, जो राष्ट्रीय एकता के भावों को अभिव्यक्ति करे जो एकता के सूत्र में बांधे रखे क्यों न राष्ट्रभाषा के सिंहासन पर आरूढ़ हो? हिंदी में सभी प्रांतीय भाषाओं के शब्द मिलते है। वह देवनागरी लिपि में लिखी जाती है जो एक वैज्ञानिक लिपि है। हिंदी की उत्पत्ति भारतीय संस्कृति की भाषा संस्कृत से हुई है। अनेक वर्षों से यह राजकाज कारोबार की और सामान्य जनता की भाषा रही है। अपने भावों को देशव्यापी अभिव्यक्ति देने के लिए शंकर देव, नारायण देव, गुरु नानक, गुजरात के नरंसी मेहता, महाराष्ट्र के नामदेव आदि ने हिंदी को ही अपनाया है। समाचार पत्र, आकाशवाणी, दूरदर्शन, सिनेमा ने हिंदी को अपनाया है। विदेशी सिनेमाओं ने भी हिंदी को अपनाया है, इस तरह भारत की एकता को व्यक्त करने वाली, अपनेपन के भाव को बढ़ाने वाली हिंदी भाषा है। एकता की सार्थक अभिव्यक्ति हिंदी भाषा में है।

राष्ट्र की चेतना, उसका स्वरुप, उसका प्रभाव और उसकी गरिमा को प्रतिपादित करने वाली राष्ट्रीय तत्त्व होते है। राष्ट्रीय तत्वों के अन्तर्गत राष्ट्रध्वज, राष्ट्रगान, राष्ट्रभाषा और साहित्य, संस्कृति सभ्यता, रीति-रिवाज, पर्व-त्यौहार आदि आते है इन सभी राष्ट्रीय तत्वों की पहचान कराने वाला तत्त्व भाषा ही है। इस प्रकार हमारे समूचे राष्ट्र की भावधारा को व्यक्त करने वाली भाषा राष्ट्रभाषा हिंदी है इसलिए देश की आत्मा है हिंदी।

"हिंदी है राष्ट्रभाषा हमारी,
वतन जैसे है प्यारी
अनेकता में एकता का नारा है,
गौरवशाली भारत हमारा है।
सांस्कृतिक मूलाधार है राष्ट्रभाषा,
अक्षुन्य रहे हिन्दवासी अभिलाषा।"

अभिजीत शा. मून
वरिष्ठ सहायक (लेखा)
भारतीय कपास निगम लिमिटेड-औरंगाबाद

जल शक्ति

प्राणा वै जगतानापो भूतानि भुवनानि च।
बहुनात्र किमुक्तेन चराचरमिदं जगतः।।

जल जगत के प्राण है जिसमें सब भुत और भुवन है सम्पूर्ण चल और अचल जगत जल के आधार पर स्थित है|

यह सर्वविदित है जल ही जीवन है| जल की अनुपस्थिति में इस प्रथ्वी पर जीवन संभव ही नहीं है| हमारे धर्म शास्त्रों में जल की महिमा का गुणगान करते हुए कई संस्कृत श्लोक दिए गए है| वेदों में 'जल' को देवता माना गया है। किन्तु उसे जल न कहकर "आप:आपो देवताय" कहा गया है। जल ही जीवन है, जीवन का आधार भी यही है। जल के बिना जीवन की कल्पना तक संभव नहीं है।

पानी के बिना मनुष्य का जीवित रहना और टिकना असंभव है। जल का उपयोग हम अपने दैनिक जीवन में साफ-सफाई, पीने, कपड़े धोने और अन्न उगाने में करते है। पानी का उपयोग बिजली पैदा करने, सामान बनाने के लिए भी किया जाता है। नदियाँ, समुद्र और महासागर के जल माल के परिवहन में मदद करते है। विश्व का अधिकांश व्यापार दैनिक आधार पर महासागरों के माध्यम से होता है। जल मौसम और जलवायु के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

मेसोपोटामिया या सिंधु घाटी सभ्यता जैसी किसी भी प्राचीन सभ्यता पर विचार करें, ये सभी नदियों के करीब बनाई गई थीं, यहां तक कि रोम भी टाइग्रिस नदी के किनारे बनाया गया था। यहां तक कि वर्तमान प्रमुख शहर जैसे लंदन, पेरिस, टोक्यो, शंघाई, न्यूयॉर्क, शिकागो आदि प्रमुख नदियों के करीब विकसित किए गए थे। सिंगापुर भी समृद्ध है क्योंकि यह जल स्रोतों के करीब है। नदियों और नहरों के

माध्यम से सामग्री के परिवहन के साथ-साथ अंतर्राष्ट्रीय शिपिंग लेन के लिए पानी का उपयोग विश्व अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।

जल की महत्ता को बयाँ हम कर नहीं सकते,
बिना पानी के जीवन में हम रह नहीं सकते.

भारत में दुनिया की आबादी का 17% हिस्सा है, लेकिन दुनिया के मीठे पानी के संसाधनों का केवल 4% ही इसके पास है। इसके अलावा, देश जलवायु परिवर्तन, जल प्रदूषण के बढ़ते स्तर और घटते जल संसाधनों के लिए जिम्मेदार अन्य महत्वपूर्ण कारकों के कारण जल संकट का सामना कर रहा है। भविष्य में पानी की बर्बादी नहीं रोके जाने पर बढ़ने वाली है। आजादी के बाद से वर्षों में, पानी की वार्षिक प्रति व्यक्ति उपलब्धता में 75% की गिरावट आई है। केंद्रीय भूजल बोर्ड के नवीनतम आंकड़ों के अनुसार, भारत के 256 जिलो में 'गंभीर' या 'अतिदोहित' भूजल स्तर में गिरावट की सूचना है। पंजाब में पहले किसी ने पानी के टैंकर नहीं देखे थे, लेकिन अब ये आम नजर आ रहे है। हालात यहां तक आ गए है कि लोग पानी खरीदने को मजबूर हो रहे है। यहां तक कि कभी कभी बिना शुद्ध किया हुआ पानी भी-जीवन यापन हेतु ग्रहणकरने हेतु मजबूर है। महाराष्ट्र अभूतपूर्व अनुपात में जल संकट का सामना कर रहा है। वर्षों के सूखे के बाद, नदी की धारा कम हो गई है, बांधों और जलाशयों में पानी कम हो गया है और भूजल के अत्यधिक दोहन ने पानी की दीर्घकालिक उपलब्धता के बारे में चिंताएँ बढ़ा दी है। भारत एक कृषि प्रधान राष्ट्र है और हमारी फसल की पैदावार के लिए काफी हद तक मानसून की बारिश पर निर्भर है। इसलिए, हमारी अर्थव्यवस्था जलवायु परिवर्तन और पानी की कमी के प्रति संवेदनशील है। इसके अलावा, हमें जल संरक्षण के तरीकों के बारे में बहुत अधिक जागरूकता पैदा करने की आवश्यकता है। हमारे किसानों को सिंचाई के उन्नत तरीकों के संपर्क में आने की आवश्यकता है ताकि वे खेती के लिए कम पानी का उपयोग करें।

जल जैसे महत्वपूर्ण संसाधन को बचाने के लिए केंद्र सरकार ने कैबिनेट मंत्री के अधीन जल शक्ति मंत्रालय बनाया है। केंद्र सरकार ने मार्च 2021 को घोषणा की कि वह अप्रैल 2021 से "जल शक्ति अभियान-2" प्रारंभ करेगी, जो देश में वर्षा जल के प्रबंधन और संरक्षण और जलभृतो का पुनःभरण के लिए एक कार्यक्रम है, जो 2024 तक हर घर में पीने का पानी उपलब्ध कराने के केंद्र के लक्ष्य का एक हिस्सा है। जल शक्ति अभियन मुख्य रूप से 256 जिलों में 1592 जल संकट वाले ब्लाकों में जल संरक्षण पर केन्द्रित है। यह जल छाजन, पारंपरिक और अन्य जल निकायों का नवीनीकरण, वाटरशेड विकास, वनीकरण जैसे हस्तक्षेपों को सुनिश्चित करता है। इसके अलावा राष्ट्रीय नदी संरक्षण निदेशालय को पर्यावरण और वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय से जल शक्ति मंत्रालय में स्थानांतरित कर दिया है। यह कदम प्रशासन को मजबूत करने और जल संबधी मुद्दों जैसे संरक्षण, विकास और प्रदूषण को कम करने को एक ही मंत्रालय के तहत लाने का प्रयास करता है।

जल संसाधन के बारे में विचार किया जाये तो, भारत में कुल 8 प्रमुख नदियाँ है और 400 से ज्यादा छोटी छोटी नदियाँ है। भारत में लगभग 197 जलविद्युत प्रकल्प है। जलविद्युत संयंत्र बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि भारत में हमारी उर्जा आवश्यकता का लगभग 25% जल विद्युत संयत्रों द्वारा पूरा किया जाता है। एक उभरते हुए विकासशील देश के रूप में भारत को उर्जा के स्वच्छ और हरित नवीकरणीय स्त्रोतों पर अधिक निर्भर होना चाहिए। नदी जैसे प्राकृतिक स्त्रोत को बचने के लिए सरकार ने राष्ट्रीय नदी संरक्षण निदेशालय गंगा नदी और उसकी सहायक नदियों को छोड़कर देश भर में सभी नदियों के लिए केंद्र प्रायोजित राष्ट्रीय नदी संरक्षण योजना को लागू करेगा।

देखा जाए तो, जल संसाधन एक शक्ति है, वो पर्याप्त होना हमारे लिए बहुत जरुरी है। ऐसे भी कहा जाता है कि अगला विश्व युद्ध पानी के लिए हो सकता है। वैज्ञानिक समुदायों को सिंचाई में उन्नत कृषि सुधारों, सुखा प्रतिरोधी फसल किस्मों

के विकास और समुद्री जल के विलीनीकरण पर काम करने की आवश्यकता है। सभी उपायों को लागत प्रभावी होने की भी आवश्यकता है। सरकार को भी साहसी कदम उठाने चाहिए जैसे कि पानी की बर्बादी को दर्शाने वाले विज्ञापनों के प्रसार प्रचार पर अंकुश लगाना चाहिए।

जल है तो सब कुछ है, जल है तो जीवन है, जल है तो भारत का विकास है चाहे वो रक्षा के मामलें में हो, अर्थव्यवस्था के मामलें में हो। जल संसाधन एक शक्ति है, वो पर्याप्त होना हमारे लिए जरुरी है। पानी की छोटी-छोटी बूंदों से सागर विशाल हो जाता है। इसलिए, बचाई गई पानी की हर बूंद नीले ग्रह पर जीवन को बचाने की दिशा में एक कदम है। जॉन ऍफ़ कैनडी ने एक बार उदधृत किया था कि जो कोई भी जल संकट को हल करता है उसे दो नोबल पुरस्कार मिलने चाहिए, एक विज्ञान के लिए और दूसरा शांति के लिए।

जल सृष्टि की देन है और जल शक्ति को बचाना हमारी जिम्मेदारी है।

बहुत अनमोल है पानी।
मत करो इसे ख़त्म करने की नादानी।।
यह जो ख़त्म हुआ एक बार।
ख़त्म हो जाएगी सब जिंदगानी।।
इसकी कीमत जिसने पहचानी।
वही है सबसे बड़ा ज्ञानी।।
ख़त्म हुई इसकी जो कहानी।
बन जाएगी धरती रेगिस्तानी।।

प्राजक्ता सुरेश बाबर
कनिष्ठ वाणिज्यिक कार्यकारी
भारतीय कपास निगम लिमिटेड-औरंगाबाद

तकनीकी के क्षेत्र में भारत के बढ़ते कदम

भारत एक विशाल राष्ट्र जिसकी भौगोलिक एवं जनसंख्या के दृष्टिकोण से विश्व में अहम स्थान है। भारत समप्रभुता सम्पन्न राष्ट्र आज तकनीकी विकास के माध्यम से विश्व पटल पर अग्रिम पंक्ति के राष्ट्रों के समकक्ष परचम लहरा रहा है। अतित के पन्नों को पलटने पर हम पायेंगे कि विश्व में भारत को जगतगुरु कहा जाता था। किन्तु सदियों तक दासता के बंधन में जकड़ा यह राष्ट्र औद्योगिक, कृषि, शिक्षा आदि क्षेत्रों में पूर्ण विकास नहीं कर सका।

यदि हम अपने धर्म ग्रंथों का अवलोकन एवं अध्ययन करें तो यह पायेंगे कि हमारी नवग्रह की पूजा में उन्ही रंगों का प्रचलन है जो आज खोज उपरांत मंगल ग्रह पर पाया गया है। महाभारत एवं रामायण में जिन अस्त्र शस्त्रों के प्रयोग का उल्लेख मिलता है वह आधुनिक युग के परमाणु बम एवं मिसाइल से अधिक उन्नत रहे है। हम धर्म ग्रंथों को छोड़ वर्तमान में अपने समीप स्थित अजन्ता एवं एलोरा की विश्व प्रसिद्ध गुफाओं को देखें। विशाल कृति में तकनीकी, कला एवं विज्ञान का अनुपम एवं अद्भुत दृश्य परिलक्षित होता है। गुफाओं का नक्शा तैयार करना एवं उन्हें मूर्त रूप देना अपने आप में भारत के विकास की गाथा चित्रित कर रहे है। विश्व पट्ल पर कही भी ऐसी अद्भुत उदाहरण जो मानव निर्मित हो देखने को नहीं मिलती।

सदियों तक दासता की जंजीरों में बंधित रहने के उपरांत भारत सन 1947 में आजादी के उपरांत विकास के लिये तकनीकी के क्षेत्र में प्रगति के पथ पर अग्रसर हुआ। भारत की कृषि, उद्योग, वाणिज्य, दैनिक, व्यवहार, चिकित्सा एवं शिक्षा आदि क्षेत्र में गतिमान हुआ एवं तकनीकी विकास के साथ राष्ट्र प्रगति के पथ पर उदित सूर्य के भांति प्रकाशवान हो रहा है।

तकनीकी विकास के कारण आजादी के उपरांत सन 1975 में भारत द्वारा आर्यभट्ट नामक उपग्रह वैज्ञानिक दृष्टिकोण से अंतरिक्ष में भेजा गया। उसके उपरांत भारत द्वारा भास्कर, रोहिणी, इन्सैट आदि उपग्रह विकसित कर सर्वेक्षण, संचार, दूरसंवेदी, बहुउद्देशी आदि कार्य हेतु प्रक्षेपित किये गये। यह ही नहीं भारत द्वारा गणित में "शून्य" की खोज की गई अप्रतिम है। आधुनिक युग में भारत द्वारा विश्व के अन्य राष्ट्रों के समान तकनीकी में कदम से कदम मिलकर चल रहा है। दूरभाष, दूरदर्शन, कंप्यूटर के साथ-साथ इंटरनेट की प्रगति एवं उनके उपयोग में भारत विश्व पटल पर उभरता हुआ सितारा ही नहीं अपितु ध्रुवतारा के समान है।

आजाद भारत के सरकार द्वारा कृषि वाणिज्य, उधोग, मनोरंजन एवं शिक्षा आदि के क्षेत्र में तकनीकी विकास के लिये नई योजनाओं को कार्यान्वित किया जा रहा है। जिसके कारण मेक इंडिया, स्किल इंडिया एवं डिजिटल इंडिया जैसे अभियान चलाये जा रहे है। जिससे न केवल भ्रष्टाचार पर अंकुश लगेगी वरन पारदर्शिता के साथ कार्य किया जायेगा। इससे हमारा राष्ट्र विकास के पथ पर चलकर नई पहचान विश्व पटल पर प्रदर्शित कर नई ऊँचाई को प्राप्त करेगा।

भौगोलिक, प्राकृतिक सम्पदा से सम्पन्न यह राष्ट्र तकनीकी विकास कर रहा है। पूर्व में कृषि हल बैल से होती थी अब ट्रेक्टर से एवं आधुनिक यंत्रों से हो रही है। पूर्व में लोग पैदल भ्रमण कर देशाटन करते थे अब सड़क, रेल, वायुयान एवं जलयान सभी प्रकार की आधुनिक वाहन देश के अंतर्गत विकसित हो रहे है। कृषि, चिकित्सा, शिक्षा, उद्योग, वाणिज्य में नित नये खोज के साथ हम नये आयाम स्थापित कर रहे हैं। तीव्रगामी आवागमन के साधन के विकास के साथ – साथ सरकार के द्वारा विभिन्न शहरों को स्मार्ट सिटी के अंतर्गत विकसित करना हमारी तकनीकी विकास का उदाहरण है। रक्षा के क्षेत्र में तकनीकी विकास एवं शिक्षा के क्षेत्र में अप्रतिम विकास के कारण भारत के निवासी विश्व पटल पर अपना अलग स्थान रखते हैं।

समग्र रूप से आजादी के उपरांत तकनीकी विकास करने के उपरांत भी भारत उस लक्ष्य को अभी प्राप्त नहीं कर सका है। हमारे राष्ट्र की भौगोलिक स्थिति काफी विशाल, बहुभाषी एवं प्राकृतिक जटिलताओं के कारण पूर्ण रूप से एक समान तकनीकी विकास का प्रभाव परिलक्षित नहीं हो पा रहा है अथवा कहा जा सकता है कि पूर्ण राष्ट्र के अंतर्गत एक समान तकनीकी विकास की गंगा नहीं बह रही है। आज भी भ्रष्टाचार के कारण शिक्षा, कृषि, व्यापार आदि में राष्ट्र तकनीकी रूप से पूर्ण विकसित नहीं हो पा पाया है। आज हम परखनली शिशु जन्म देने की क्षमता के उपरांत भी मनोवृति उच्च कोटि की नहीं होने के कारण बेटी बचाओं अभियान का नारा दे रहे है। यह संकुचित मानसिकता का द्योतक है। गरीबी, कुपोषण एवं आर्थिक असमानता के कारण हमारा राष्ट्र पूर्ण रूप से विकसित नहीं हो पाया है। आर्थिक क्षेत्र में हम अन्य राष्ट्रों से काफी पीछे है।

अतएव हमें भारत का निर्माण एक जुट होकर सिर्फ सरकार पर निर्भर न रहते हुये गैर सरकारी संगठन एवं स्वयंसेवी संस्था के मदद से आर्थिक सहायता लेते हुये पूर्ण ईमानदारी एवं पारदर्शिता के साथ अपना कार्य करना होगा। तभी एक सशक्त राष्ट्र का तकनीकी विकास होगा एवं भारत विश्व पटल पर अपना लोहा मनवाते हुये दैदीप्यमान सूर्य की भांति चमकेगा।

बी.एन.तिवारी
सहायक प्रबन्धक (विपणन)
भारतीय कपास निगम लिमिटेड-औरंगाबाद

माँ



सबसे आखिर में सोती थी, सबसे पहले उठ जाती थी,
पहले सितारों को सुलाती, फिर सूरज को जागती थी..

दुनिया भर की बलाओं से बचाने के लिये मेरी माँ,
कान के पीछे, एक माथे पर काजल का टीका लगाती थी.

घुटनों पर बैठ, चेहरे को नरम हाथों से पकड़ कर,
मुझे कंघी करती, मेरी बहन की दो चोटी बनाती थी..

कपड़े बुनती रहती थी कभी–कभी दिन के पहर में,
बचे चिथड़े के टुकड़े से एक प्यारी दुल्हन बनाती थी..

राजा-रानी, एक परियों की दुनिया भी होती थी उसमें,
हमे जब भी वो कोई, रात को कहानी सुनाती थी..

कमर से झुकी हुई पड़ोस में मेरे 90 साल की बुढ़िया,
उसे देखकर माँ को, मेरी नानी याद आ जाती थी..

ऊंच-नीच, जात-धर्म, छूत-अछूत को नहीं मानती वो,
मंदिर में दिया जलाने से पहले, भूखों को भोजन कराती थी..

वीरेंद्र
सहायक (सामान्य)
भारतीय कपास निगम लिमिटेड-औरंगाबाद

दैनिक जीवन में योग का महत्व

भारतीय संस्कृती में योग का बड़ा महत्व है। भारतीय योग शास्त्र बहुत ही प्राचीन शास्त्र है। कहा जाता है कि सृष्टि स्वयं ब्रह्मा से मानव-जाति को मिला हुआ यह एक वरदान है। योग शास्त्र एक ऐसा शास्त्र है जो मानव के सभी विकारों पर विजय पाने की क्षमता रखता है। मुनिश्रेष्ठ पतंजलि ने ईसा से दो सौ वर्ष पहले योग की रचना की थी। प्राचीन वेद ग्रंथों में जगह-जगह इसकी पुष्टी मिलती है। जैसे-जैसे समय बीतता गया इसकी रचना बदल गई है पर योग शास्त्र आज भी अपनी जगह श्रेष्ठ है।

प्राचीन भारत की रचना कई वर्षों तक पुश्तैनी प्रकार की थी। पारंपरिक उद्योग, व्यवसाय होने के कारण आर्थिक व्यवहार कम मात्रा में होने के कारण समस्याएं भी थोड़ी कम थी। धीरे-धीरे समय बीत जाने पर लगभग सौ साल पहले सामाजिक-वैचारिक क्रांति हुई और सारा ढाँचा ही बदल गया। वैज्ञानिक क्रांति के कारण कुछ चीज़े आसानी से मिलने तो लगी पर जीवन कठिन बन गया। शहरों में अन्न, वस्त्र और आवास की समस्याए बढ़ने लगी। स्पर्धा के युग में मानव इतना व्यस्त हो गया कि वह अपनी शारीरिक क्षमता से बाहर काम करने लगा। कई कठिनायों का सामना आज उसे करना पड़ रहा है। वरिष्ठ लोगों की समस्याएं भी सामने आ रही हैं। स्पर्धाओं के कारण युवक आज परेशानी का सामना कर रहे हैं। कार्यालयों में एक ही जगह बैठने या खड़े रहने के कारण पीठ की हड्डी, रक्तचाप, मधुमेह जैसे बीमारियों का सामना आज करना पड रहा है। हमारा भारतीय योग शास्त्र एक ऐसा सशक्त शास्त्र है जो आदमी की सामाजिक, आध्यात्मिक अंगो के विकास की क्षमता तो रखता ही है, साथ ही मानव के वैयक्तिक सांस्कृतिक स्तर समाज के सांस्कृतिक स्तर को ऊँचा उठाने की भी क्षमता रखता है।

योग शास्त्र मानव को ऐसा विकसित करता है कि वह मनुष्य को उसके अंतिम ध्येय तक पहुंचाता है। यह शास्त्र मानव के आचार-विचार में अमूल्य बदलाव करता है।

योग मानव का चित्त विकसित करता है।

भाषा को उच्च करता है, व्याकरण और शरीर को व्याधिमुक्त करता है। -

वैदिकशास्त्र

अखंड मानव जाति को योग का ऐसा वरदान देने वाले मुनिश्रेष्ठ पतंजलि को सादर प्रणाम! जिनका आकार मनुष्याकार है, हाथ में शंख, चक्र, और तलवार लिए हुए इस ऋषि श्रेष्ठ पतंजलि को प्रणाम!!

मानवीय जीवन में व्यस्तता को देखते हुए आज कई लोग और संस्थाए योग का प्रचार और प्रशिक्षण देने लगी हैं। आज काम-काज के कारण इन्सान यहाँ से वहाँ भाग दौड़ करते ही रहता है। इस कारण उसे कई समस्याओं का सामना करना पडता है, उसमें उसे शांति कहाँ से और कब मिलेगी?

योग एक ऐसा शास्त्र है जो आदमी को शांति का दुर्लभ आनंद देता है। आदमी के आचार-विचार कर्म में विश्वास पैदा करके अंतिम ध्येय तक पहुंचता ही है।

आज मानव जाति इतनी व्यस्त है कि किसी को भी अपनी सेहत पर ध्यान देने का समय नहीं मिलता। पर लगभग पचास वर्षों से धीरे-धीरे आदमी के विचारों में बदलाव आता नजर आ रहा है। यह एक अच्छा संकेत है। वैज्ञानिक क्रांति के कारण जो समाज व्यस्त हो गया था उसे अब धीरे-धीरे दैनंदिन जीवन में योग का महत्व मालूम होने के लगा है। योग आदमी को उसके विचारों को सशक्त बनाता है। योग के कारण हम अपने अन्दर के विकारों पर विजय पाने की क्षमता रखते हैं। कई बार सत्य और असत्य की चक्कर में आदमी के हाथ से कई गलत कृत्य हो जाती है। बुरे आचार-विचार हमेशा ज्यादा असर करके समाज में आदमी के वैयक्तिक

स्तर को नीचा कर देते है पर योगशास्त्र एक ऐसा सशक्त शास्त्र है कि कड़ाई से और नियमित रूप से इसका आचरण करें तो आदमी अवश्य अपने अंतिम ध्येय तक पहुँच ही जाता है। आज हमारे सरकार ने भी योग का महत्व जानकर योग का सन्मान करके योग दिवस मनाना शुरू किया है। अगर कुछ बातों को नजर अंदाज किया जाए तो अच्छाई को स्वीकार करते हुए हमें योगशास्त्र को अपनाने में क्या हर्ज है। अगर हम अपना समाज का और देश का विकास चाहते हैं तो क्या हर्ज है हम योग को अपनायें इससे हमारा कोई वैयक्तिक आर्थिक नुकसान या घाटा तो नहीं होगा, अगर हुआ तो सर्वांगीण विकास होकर हमें वो विश्वास जरुर मिलेगा जो शायद हमारी आगे की जिन्दगी में काम आ जाये।

योग हमारे देश को उपहार में मिली हुई धरोहर है। योग हमारी साधना है। योग हमारा सम्मान है, आत्मबल है। अगर इतनी सारी बातें हमें उपहार में मिल रही है तो हमें यहाँ-वहाँ जाने की क्या जरुरत है। इसका महत्व जानकर दिनभर में से कुछ समय अगर हम स्वयं को दे सके तो इसका फल भी हमें ही चखना है।

योग हमारा मान है, योग मानव का सम्मान है,

योग धरती की शान है, और देश का अभिमान है।

हमारा प्राचीन शास्त्र "योग शास्त्र" आओ इसे अपनायें और अपने जीवन को सुखमय बनाएं।

सत्यप्रकाश तिवारी

भारतीय कपास निगम लिमिटेड-औरंगाबाद

आंतरिक गतिविधियां



शाखा कार्यालय औरंगाबाद में दिनांक 01.03.2023 से 15.03.2023 तक आयोजित स्वच्छता पखवाड़े के अंतर्गत उप महाप्रबंधक, भा.क.नि.लि.- औरंगाबाद के द्वारा सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को स्वच्छता की शपथ दिलाई गयी। दाएं से श्री अर्जुन एस दवे, उप महाप्रबंधक, श्री पुनीत राठी, सहायक महाप्रबंधक (वित्त / लेखा), श्री बी एन तिवारी, सहायक प्रबन्धक (विपणन), तथा श्री दिनेश कुमार बिष्ट, सहायक प्रबन्धक (विपणन).



स्वच्छता की शपथ ग्रहण करते हुये शाखा कार्यालय औरंगाबाद के कर्मचारीगण

वृक्षा रोपण कार्यक्रम:-







स्वच्छता पखवाड़े के अंतर्गत श्री अर्जुन एस दवे, उप महाप्रबंधक, भाकनिलि-औरंगाबाद तथा शाखा के अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा दिनांक 14.03.2023 को शाखा के निकट औरंगाबाद महानगर पालिका के अंतर्गत आनेवाले म्यूजियम भारत माता मंदिर के प्रांगण में वृक्ष लगाया गया।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस की झलकियाँ :-

दिनांक 08.03.2023 को विश्व महिला दिवस के अवसर पर शाखा प्रमुख श्री अर्जुन एस दवे, उप महाप्रबंधक द्वारा शाखा में उपस्थित एवं कार्यरत नारी शक्ति का सम्मान पुष्पगुच्छ एवं भेंटवस्तु देकर किया गया।



श्री अर्जुन एस दवे, उप महाप्रबंधक, से पुष्पगुच्छ ग्रहण करते हुये श्रीमती श्वेता कोडगुले, वरिष्ठ सहायक (लेखा) एवं अन्य अधिकारी कर्मचारीगण।



श्री अर्जुन एस दवे, उप महाप्रबंधक, से पुष्पगुच्छ ग्रहण करते हुये श्रीमती आम्रपाली अविनाश गायकवाड, सहायक (सामान्य) एवं अन्य अधिकारी कर्मचारीगण।



श्री बी एन तिवारी, सहायक प्रबंधक, (विपणन) से पुष्पगुच्छ ग्रहण करते हुये सुश्री प्राजक्ता बाबर, कनिष्ठ वाणिज्यिक कार्यकारी एवं अन्य अधिकारी कर्मचारीगण।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह वर्ष – 2022 की झलकियाँ (शाखा कार्यालय)











सतर्कता जागरूकता सप्ताह वर्ष – 2022 की झलकियाँ (केंद्र)













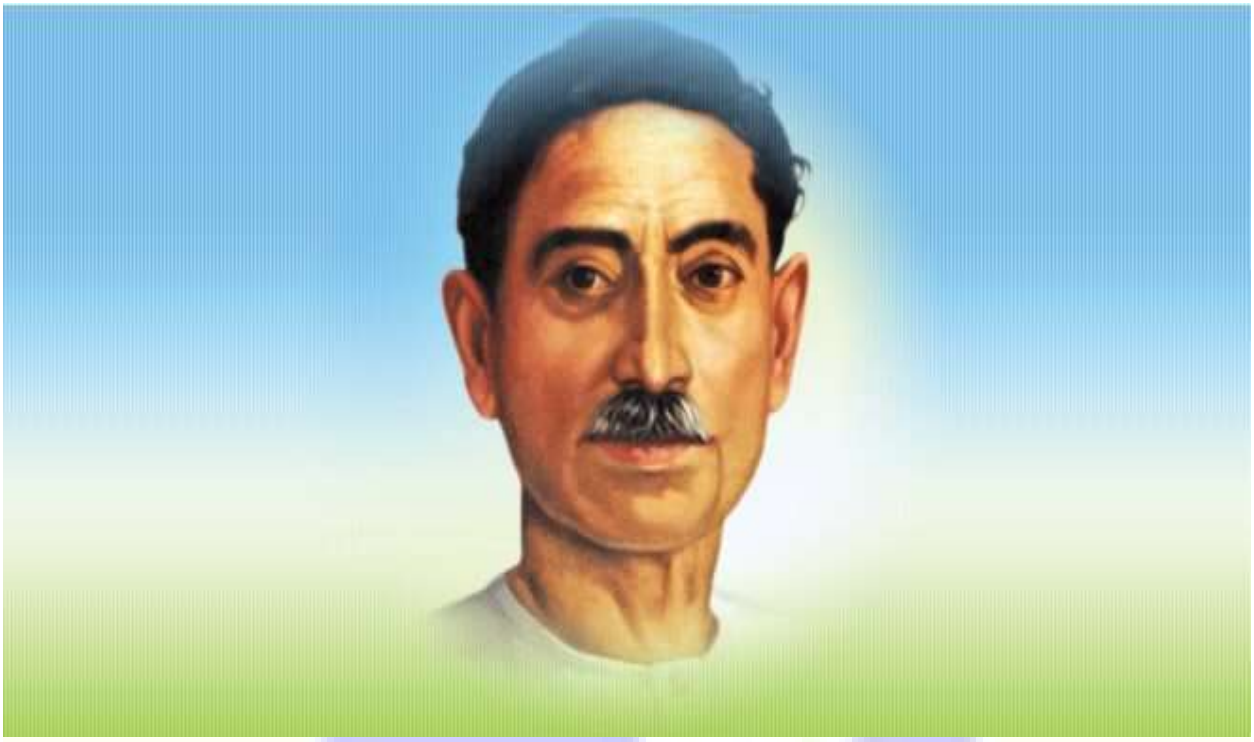
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति पुरस्कार वर्ष-2021-22



हिंदी में उत्कृष्ट कार्य निष्पादन हेतु शाखा कार्यालय औरंगाबाद को नराकास-औरंगाबाद द्वारा प्रथम पुरस्कार(उपक्रम) माननीय मुख्य अतिथि महोदय श्री मनोज कुमार रजक, आयुक्त माल एवं सेवाकर, औरंगाबाद, से ग्रहण करते हुये श्री अर्जुन एस.दवे, उप महाप्रबंधक, भारतीय कपास निगम लिमिटेड साथ में श्री पुनीत राठी, सहायक महाप्रबंधक (वित्त/लेखा), भारतीय कपास निगम लिमिटेड-औरंगाबाद तथा श्री जगदीश तांबे, आयुक्त-1,भविष्य निधि संगठन,औरंगाबाद।



हिंदी में उत्कृष्ट कार्य निष्पादन शाखा कार्यालय औरंगाबाद के हिंदी अधिकारी श्री दिनेश कुमार बिष्ट, सहायक प्रबन्धक(विपणन) को नराकास-औरंगाबाद द्वारा स्मृति चिन्ह माननीय मुख्य अतिथि महोदय श्री मनोज कुमार रजक, आयुक्त माल एवं सेवाकर, औरंगाबाद द्वारा प्रदान किया गया।



मुंशी प्रेमचंद का जन्म 31 जुलाई 1880 को वाराणसी जिले के लमही नामक गांव मे हुआ। इनकी माता का नाम आनंदी देवी एवं पिता का नाम मुंशी अजायबराय था जो लमही में डाक मुंशी थे 7 वर्ष की अवस्था में उनकी माता का तथा 16 वर्ष की अवस्था में उनके पिता का निधन हो गया। जिस कारण उनका प्रारंभिक जीवन संघर्ष में रहा। उनका मूल नाम धनपतराय श्रीवास्तव था। प्रेमचंद की प्रारंभिक शिक्षा फारसी में हुई। 1898 में मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद वे एक स्थानीय विद्यालय में शिक्षक नियुक्त हो गए। नौकरी के साथ ही उन्होंने पढ़ाई जारी रखी। बी.ए. पास करने के बाद वे शिक्षा विभाग के इंस्पेक्टर पद पर नियुक्त हुए। इनका पहला विवाह उस समय की परंपरा के अनुसार 15 वर्ष की उम्र में हुआ जो सफल नहीं रहा। 1906 में उन्होंने बाल विधवा शिवरानी देवी से दूसरा विवाह किया उनकी तीन संताने श्रीपत राय, अमृतराय और कमला देवी श्रीवास्तव हुई। 1921 में असहयोग आंदोलन के दौरान महात्मा गांधी की सरकारी नौकरी छोड़ने के आह्वान पर स्कूल इंस्पेक्टर पद से 23 जून को त्यागपत्र दे दिया। इसके बाद उन्होंने मर्यादा, माधुरी आदि पत्रिकाओं में संपादक के रूप में कार्य किया।

*****